गुप्तों का राजनीतिक इतिहास एवं चन्द्रगुप्त प्रथम

22th lecture.

- ममता रानी
इतिहास विभाग
एस एन एस- आर के एस.
कॉलेज, सहरसा

23-04-2020

Scanned with CamScanner

गुप्तो का राजनीतिक इतिहास एवं चन्द्रगुप्त-I

22th Lecture

राजनीतिक इतिहास :-

→ मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद दीर्घकाल तक भारत एक शासन सूत्र के अन्तर्गत नही आ सका। कुषाणो एवं सातवाहनो ने कुछ हद तक स्थिरता लाने का प्रयास किया किन्तु वे उत्तर एवं दक्षिण भारत तक ही सीमित रहे।

→ इस राजनीतिक विघटन का सामना करने के लिए मुख्य रूप से तीसरी शताब्दी में भारत के तीन कोनो से तीन नये राजवंशों का उदय हुआ। मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग मे नाग शक्ति, दक्कन मे वाकाटक तथा पूर्वी भारत मे गुप्तवंश के शासक उदित हुए।

→ गुप्त वंश का आरंभिक राज्य उत्तरप्रदेश और बिहार मे था। संभवत: गुप्त शासको के लिए बिहार की अपेक्षा उत्तरप्रदेश अधिक महत्व वाला प्रान्त था क्योंकि आरंभिक गुप्त मुद्राएँ और अभिलेख मुख्यत: इसी राज्य में पाए गये हैं। संभवत: गुप्त लोग कुषाणो के सामंत थे।

→ कुषाणो के पतन के बाद से लेकर गुप्तो के उदय के पूर्व का काल राजनीतिक दृष्टि से विकेन्द्रीकरण तथा विभाजन का काल माना जाता है। गुप्तो की उत्पत्ति का प्रश्न प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक विवादग्रस्त प्रश्न रहा है।

→ चन्द्रगोमिन के व्याकरण नामक ग्रंथ मे गुप्तो को उदय के पूर्व का काल जर्ट अर्थात् जाट कहा गया है।

Scanned with CamScanner

→ गुप्तों की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों का मत →

विद्वान	मत
केपी. जायसवाल	शूद्र
एलन. अल्तेकर रोमिला थापर	वैश्य
गौरी शंकर ओझा, रमेशचन्द्र मजूमदार चट्टोपाध्याय	क्षत्रिय
हेमन्त राय चौधरी	ब्राह्मण।

→ गुप्तों की उत्पत्ति के विषय में जितने भी मत दिये गये हैं उनमें उनको ब्राह्मण जाति से संबंधित करने का मत कुछ तर्क संगत प्रतीत होता है।

→ गुप्तवंशीय लोग धारण गोत्र के थे यह उल्लेख चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने अपने पूना ताम्रपत्र में किया है। यह गोत्र उसके पिता का हो या क्योंकि उसका पति वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय विष्णुवृद्धि गोत्र का ब्राह्मण था।

→ स्मृतियों के अनुसार नाम के उत्तरांश गुप्त शब्द का जोड़ा जाना वैश्यों की विशेषता थी। गुप्तवंशावली का परिचय देने के लिए हमारे पास अनेक अभिलेख हैं जिनमें सबसे प्रमुख है समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख, कुमार गुप्त का बिलसड़ स्तंभ लेख और स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तंभ लेख।

→ इन अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर गुप्तों के आदि पुरुष का नाम श्रीगुप्त था। उसका उत्तराधिकारी सुपुत्र घटोत्कच था परंतु गुप्तवंशावली में सबसे पहला शासक चन्द्रगुप्त - I मिलता है, उसने महाराजाधिराज की उपाधि ग्रहण की।

Scanned with CamScanner

चन्द्रगुप्त - I
(319 - 335) AD.

→ चन्द्रगुप्त - I ने ही गुप्तवंश को एकसाम्राज्य की प्रतिष्ठा प्रदान की। इसे इतिहासमें एक नये संवत चलाने का श्रेय भी दिया जाता है। गुप्तसंवत तथा शक संवत के बीच 241 वर्षों का अन्तर था।

→ इसे गुप्तवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। मुद्रा साक्ष्यों से स्पष्ट होता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया था। गुप्तवंश में ही सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम ने ही रजत (चाँदी) की मुद्राओं का प्रचलन करवाया था।

Scanned with CamScanner